State Council of Educational Research & Training, Chhattisgarh

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,छत्तीसगढ़, शंकर नगर, रायपुर

Telephone-0771-2443596 Fax-0771-2443496 Website: www.scert.cg.gov.in Email:scertcg@gmail.com

क्रमांक / परिषद् / SCERT/ODL/ 2018 / 4533 रायपुर, दिनांक 29.09.18

प्रति,

समस्त अध्ययन केन्द्र
दूरस्थ शिक्षा–SCERTCG-NIOS
डी.एल.एड. पाठ्यक्रम

विषयः–SCERTCG-NIOS द्वारा संचालित डी.एल.ए पाठ्यक्रम में विषय कोड–506, 507, 508, 509 एवं 510 हेतु द्वितीय वर्ष की संपर्क कक्षाएँ (PCP) आयोजित करने बाबत्।

———000———

SCERTCG-NIOS द्वारा दूरस्थ माध्यम से डी.एल.एड. की पाठ्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। डी.एल.एड. पाठ्यक्रम की द्वितीय वर्ष हेतु 15 दिवस सपंर्क कक्षाएँ (PCP) का आयोजन किया जाना है।

द्वितीय वर्ष के संपर्क कक्षाओं के संचालन हेतु दिशा निर्देश –

1. संपर्क कक्षाओं में प्रतिदिवस दो स्रोत व्यक्तियों का मानदेय देय होगा।
2. दूरस्थ शिक्षा केन्द्र प्रभारी के अतिरिक्त प्रतिदिवस केवल दो स्रोत व्यक्तियों के मानदेय का प्रावधान किया गया है। अध्ययन केन्द्र प्रभारी द्वारा अलग–अलग विषयों हेतु अलग–अलग स्रोत व्यक्ति नियुक्त किये जा सकेंगे। एक अध्ययन केन्द्र हेतु अधिकतम 04 स्रोत व्यक्ति होंगे।
3. वरिष्ठ स्रोत व्यक्ति किसी एक विषय पर परामर्श प्रदान करेंगें एवं असाइनमेंट का मूल्यांकन भी करेंगे।
4. 15 संपर्क कक्षाओं का आयोजन निम्नानुसार आयोजित किया जायेगा :–

1.	07 अक्टूबर, 2018	9.	06 नवम्बर, 2018
2.	17 अक्टूबर, 2018	10.	09 नवम्बर, 2018
3.	18 अक्टूबर, 2018	11.	10 नवम्बर, 2018
4.	20 अक्टूबर, 2018	12.	11 नवम्बर, 2018
5.	21 अक्टूबर, 2018	13.	17 नवम्बर, 2018
6.	28 अक्टूबर, 2018	14.	18 नवम्बर, 2018
7.	04 नवम्बर, 2018	15.	23 नवम्बर, 2018
8.	05 नवम्बर, 2018		

5. संपर्क कक्षाओं की तिथियों में विधानसभा चुनाव अथवा अन्य स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार दूरस्थ अध्ययन केन्द्र प्रभारी तिथियों में परिवर्तन कर सकते हैं, परिवर्तन की स्थिति में सूचना संबंधित प्रशिक्षार्थियों, डाइट एवं क्षेत्रीय निदेशक, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान रायपुर का देवें।

6. संपर्क कक्षाओं को परिवर्तन की स्थिति में सलाह दी जाती है कि स्थानीय परिस्थितियों को देखते हुए शनिवार को संपर्क कक्षाएँ लगाई जायें।
7. संपर्क कक्षाओं की अध्ययन सामग्री http://dled.nios.ac.in तथा http://scert.cg.gov.in में इलेक्ट्रानिक माध्यम में उपलब्ध है इसका उपयोग किया जाना है।
8. संपर्क कक्षाओं की समय–सारणी अध्ययन केन्द्र स्तर पर ही निर्धारित किया जाना है। इस हेतु राज्य स्तर से समय–सारणी उपलब्ध नहीं करायी जायेगी।
9. विषय कोड 506, 507, 508, 509 एवं 510 के असाइनमेंट स्वयं पोर्टल पर उपलब्ध होगी। प्रशिक्षार्थियों को विषय कोड 506, 507, 508, 509 एवं 510 के लिए स्वयं पोर्टल पर पंजीयन कराना अनिवार्य होगा। प्रशिक्षार्थियों से स्वयं पोर्टल पर उपयोग किए गए मोबाइल नम्बर एवं ई–मेल एड्रेस उपस्थिति पंजी में लिखवा लें।
10. सभी प्रशिक्षार्थियों को सूचित हो कि स्वयंप्रभा डी.टी.एच. के चैनल क्रमांक 32 पर 24 x 7 डी.एल.एड. पाठ्यक्रम हेतु विडियो लेक्चर का प्रसारण किया जा रहा है।
11. अध्ययन केन्द्र प्रभारी सभी असाइनमेंट 18 नवम्बर, 2018 तक जमा करायें एवं 23 नवम्बर, 2018 तक मूल्यांकन कर ले जिससे अंकों की प्रविष्टि की सुविधा ऑनलाईन उपलब्ध होते ही NIOS के वेबसाइट पर कराई जा सके।
12. असाइनमेंट अंग्रेजी माध्यम वाले प्रशिक्षार्थी अंग्रेजी में एवं हिन्दी माध्यम वाले प्रशिक्षार्थी हिन्दी में लिखेंगे।
13. समस्त प्रशिक्षार्थियों को संपर्क कक्षा में प्रथम दिवस स्पष्ट निर्देश दें, कि सैद्धांतिक परीक्षा के लिए 15 संपर्क कक्षाओं में से 11 दिवस की उपस्थिति अनिवार्य होगी।

Sunita

(डॉ. सुनीता जैन)
अतिरिक्त संचालक
एस.सी.ई.आर.टी., छत्तीसगढ़

पृ. क्रमांक / परिषद् / SCERT/ODL/ 2018 / 4534
रायपुर, दिनांक 29.09.18

प्रतिलिपि –

1. अध्यक्ष, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान, नई दिल्ली।
2. सचिव, छ.ग. शासन, स्कूल शिक्षा विभाग, मंत्रालय, महानदी भवन, नया रायपुर।
3. संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, इन्द्रावती भवन, नया रायपुर को सूचनार्थ।
4. प्रबंध संचालक, राजीव गांधी शिक्षा मिशन, रायपुर को सूचनार्थ।
5. समस्त कलेक्टर को सूचनार्थ।
6. क्षेत्रीय संचालक, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान, रायपुर को आवश्यक कार्यवाही हेतु।
7. डी पी सी सी पश्चिम क्षेत्र
8. प्राचार्य, डाइट ..... को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।
9. जिला शिक्षा अधिकारी ..... को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।

Sunita

अतिरिक्त संचालक
एस.सी.ई.आर.टी., छत्तीसगढ़

कार्यक्रम निर्देशिका

सेवारत अप्रशिक्षित अध्यापकों

के लिए

प्रारंभिक शिक्षा में द्वि-वर्षीय डिप्लोमा

(डी.एल.एड.)

2012

शैक्षिक विभाग

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

A-24/25 सांस्थानिक क्षेत्र, सेक्टर-62, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.-201309

वेबसाइट : www.nios.ac.in

अधिगम समर्थन केंद्र टोल फ्री नं. 18001809363, ईमेल : isc@nios.ac.in

राष्ट्रीय प्रणाली और CBSE/CISCE द्वारा समर्थित

भारत सरकार की एक परीक्षा समिति

- शैक्षिक समर्थन प्रणाली और शिक्षक सशक्तिकरण
- शिक्षकों को समावेशी प्रशिक्षण
- विद्यालय में बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए शिक्षकों का सशक्तिकरण

इकाई 10 : प्रारंभिक शिक्षा में अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

- जामटीन सम्मेलन (1990) के मुख्य दबाव और E-9 देशों और दक्षिण एशिया क्षेत्र पर प्रभाव
- विकासशील एवं विकसित देशों में प्रारंभिक शिक्षा की पहल
- UEE में अन्तराष्ट्रीय अभिकरणों (UNESCO, UNICEF, विश्व बैंक, DFID, SIDA) की भूमिका
- विश्व शिक्षा सम्मेलन, डकार, सेनेगल 2009
- सबके लिए शिक्षा की पहल

पाठ्यक्रम 506 — समावेशी संदर्भ में बच्चों को समझना

बच्चों को प्रभावी ढंग से पढ़ाने एवं उनके साकल्यवादी तरीके से विकास में सहायता प्रदान करने के लिए शिक्षकों में बच्चों की प्रकृति एवं उनकी आवश्यकताओं की सार्थक समझ होनी चाहिए। बच्चों को संपूर्णता में समझे बगैर प्रभावी शिक्षण संभव नहीं है। यह पाठ्यक्रम आपको बच्चों के व्यक्तिगत अन्तरों को समझने और तद्नुसार व्यवहार करने में सहायक होगा। शिक्षकों से उम्मीद की जाती है कि वे ऐसा सहायक वातावरण और बच्चों के प्रति केन्द्रित शिक्षा शास्त्रीय प्रक्रिया सृजित करें ताकि प्रत्येक बच्चा स्वतंत्र रूप से अपना दृष्टिकोण रखे, भयमुक्त अनुभव करे और अपने ज्ञान को अनुभवों पर आधारित बनाये। शिक्षकों को बच्चों के निर्विघ्न विकास के लिए उनके अधिकारों की रक्षा और उनके हक को महत्व प्रदान करना चाहिए। इस पाठ्यक्रम में होने वाले विचार विमर्श आपको बच्चों के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ के प्रति अधिक संवेदनशील एवं अन्त: दृष्टिपूर्ण करेगा।

यह पाठ्यक्रम बच्चों के विकास और उनके शिक्षण-अधिगम आशय के आधारभूत अवधारणा और सिद्धान्तों की समझ विकसित करने को लक्ष्य में रख कर किया गया है। शिक्षक बच्चों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में मार्गदर्शन कर सकते हैं। व्यक्तिगत भेदभावों जैसे, लैंगिक मुद्दे और सामाजिक-आर्थिक तथ्यों की समझ, शिक्षकों को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए सहायक वातावरण सृजित करने में सहायक होंगी।

पाठ्यक्रम का प्रारूप:-

पाठ्यक्रम का प्रारूप इस प्रकार बनाया गया है जिससे वह निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त कर सके:-

- बच्चों को समझने में एक शिक्षक की भूमिका का वर्णन करना।
- बच्चों के व्यक्तित्व के विकास के लिए रणनितियों पर विचार विमर्श करना।
- अधिगमकर्ताओं और उनकी अधिगम प्रक्रिया को समझना।
- क्षेत्र-आधारित गतिविधियों की जिम्मेवारी लेना, अवधारणाओं को संदर्भ में समझना।

- प्रत्येक इकाई के अन्त में पढ़ाये एवं सुझाये गये सलाहों के माध्यम से इस पाठ्यक्रम के विविध अवधारणाओं से परिचित कराने में शिक्षक को समर्थ बनाना।

मूलाधार:

इस पाठ्यक्रम का प्रारूप शिक्षकों के लिए प्रारंभिक स्तर पर बच्चों एवं उनके बचपन को समझने के लिए तैयार किया गया है। यह एक बुनियादी पाठ्यक्रम है जो शिक्षण प्रवीणता एवं योग्यता पर आधारित है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य आपको पृष्ठभूमि ज्ञान से सुसज्जित करना है। जो कि प्रारंभिक विद्यालय के बच्चों और उनके सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ की समझ विकसित करने में सहायक है। यह विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति संवेदनशीलता विकसित एवं जो कक्षा के वातावरण को स्वस्थ एवं प्रभावी बनाता है।

विशिष्ट उद्देश्य :-

यह पाठ्यक्रम निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्यो को प्राप्त करने का इरादा रखता है:-

- एक बच्चे के विभिन्न पक्षों शारीरिक, गत्यात्मक, सामाजिक, और भावात्मक विकास की समझ को विकसित करना।
- बच्चों को पढ़ाने के लिए उपयुक्त तरीके और माध्यम चुनने के लिए शिक्षकों को समर्थ बनाना।
- समावेशी वातावरण में बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए समझ को बनाना।

पाठ्यक्रम 4 खण्डों में संगठित 13 इकाईयों को समाविष्ट करता है जो इस प्रकार दिये गये हैं।

इकाईयों में शामिल मुख्य अवधारणा प्रत्येक इकाई के अर्न्तगत मुख्य रूप से दिये गये हैं।

खण्ड-1: बच्चे की वृद्धि एवं विकास को समझना

इकाई 1 : बच्चों को समझना

- वृद्धि एवं विकास के सिद्धान्त/लक्षण
- वृद्धि एवं विकास के बीच सम्बन्ध
- शैशव से बचपन की वृद्धि और उनके तात्पर्यों का स्तर
- विकास के स्तर (शरीरिक, सामाजिक, भावात्मक, गत्यात्मक, संवेगात्मक और नैतिक) और शिक्षण तथा अधिगम प्रक्रियाओं के विकास के स्तर का तात्पर्य
- वृद्धि एवं विकास के सरलीकरण के तथ्य
- बच्चों के वृद्धि एवं विकास में शिक्षक की भूमिका

इकाई 2: आनुवंशिकता एवं पर्यावरण की भूमिका

- आनुवंशिकता एवं पर्यावरण की अवधारणा
- आनुवंशिकता की क्रियाविधि, पर्यावरण के तथ्य एवं महत्व
- आनुवंशिकता का सापेक्षिक अभिप्राय और बच्चे की समझ में पर्यावरण
- आनुवंशिकता का तात्पर्य और बच्चे के विकास के लिए पर्यावरण

खण्ड-2: बच्चों का व्यक्तित्व विकास

इकाई 3: व्यक्तित्व का विकास करना और इसका मूल्यांकन

- व्यक्तित्व की प्रकृति एवं अवधारणा
- व्यक्तित्व के लक्षण एवं आयाम
- व्यक्तित्व के सिद्धान्त; स्व अवधारणा का विकास, मूल्यों, मनोवृति, प्रत्यक्ष ज्ञान और प्रेरणा; नेतृत्व व्यवहार
- व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले तथ्यों का मूल्यांकन
- व्यक्तित्व विकास में शिक्षकों की भूमिका

इकाई 4: चिन्तन कौशलों का विकास

- चिन्तन के सरलीकरण के स्तर, प्रकार और यंत्र
- आलोचनात्मक, अभिसारी एवं अपसारी चिन्तन का विकास, बच्चे को चिन्तन आधारित तर्कसंगत निर्णय लेने में समर्थ बनाना
- कक्षा कक्ष में बच्चों में प्रश्न पूछने की प्रवीणता का सरलीकरण करना
- चिन्तन कौशल के विकास में विद्यालय और शिक्षक की भूमिका

इकाई 5: स्वयं का विकास

- बच्चों में स्वयं के अवधारणा का विकास
- स्थितियाँ जो बच्चों में स्वयं के संकल्पना को प्रभावित करें —
- बच्चों में स्वयं के संकल्पना को प्रभावित करने वाले कारक —
  - — बच्चों में मूल्यों एवं नैतिकता का विकास
  - — मूल्यों के विकास में अनुशासन की भूमिका
  - — बच्चों में अच्छी मनोवृतियों के विकास करने में शिक्षक के मनोभाव एवं भूमिका का विकास

— बच्चों में अवबोधन का महत्व और इसका विकास

— बच्चों में अभिप्रेरण, दृढ़ता, चुनौती एवं निर्भरता की रूचि

— अभिप्रेरण को विकसित करना और बढ़ाना

ईकाई 6: बच्चों में सृजनशीलता विकसित करना

- सृजनशीलता की संकल्पना एवं प्रकृति
- सृजनशीलता का मूल्यांकन
- सृजनशीलता को प्रभावित करने वाले कारक
- गतिविधियों के द्वारा सृजनशीलता का विकास करने की रणनीति (सृजनशीलता को बढ़ाने वाली गतिविधियाँ)

  (a) शैक्षिक (b) सह-शैक्षिक
- सृजनशीलता को प्रोत्साहित करने के लिए अधिगम सामग्री विकसित करना

खण्ड 3: समावेशी शिक्षा

इकाई 7: समावेशी शिक्षा का परिचय

- विशेष शिक्षा, एकीकृत शिक्षा और समावेशी शिक्षा की संकल्पना और प्रकृति
- समावेशी विद्यालय एवं कक्षाकक्ष को प्रभावित करने वाले कारक
- समावेशी अधिगम सामग्री, भौतिक वातावरण और कक्षाकक्ष प्रबंधन
- समावेशी मूल्यांकन प्रणाली को विकसित करना
- वंचित समूह: दलित, आदिवासी, श्रमिक बच्चा, और अन्य प्रकार के समावेशन

इकाई 8: CWSN की अवधारणा

- CWSN को परिभाषित करना
- अशक्तता के प्रकार (मानसिक, शारीरिक, भावात्मक, व्यवहारिक, अधिगम आदि) और बच्चों की वृद्धि पर उनका प्रभाव
- अशक्त बच्चों की वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक, क्यों वे 'प्रतीक्षा वाले बच्चे' उल्लेखित किये जाते हैं?
- प्रारंभिक पहचान, मूल्यांकन और हस्तक्षेप

- PWD कानून 1994, केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों की भूमिका
- कक्षा कक्ष में CWSN को संचालित करने में एक शिक्षक कैसे मार्मिक भूमिका निभा सकता है।
- CWSN को पहचानने एवं संबोधित करने में शिक्षक की भूमिका
- प्रारंभिक स्तर पर CWSN की अधिगम आवश्यकतायें

इकाई 9: CWSN की शिक्षा

- CWSN की शैक्षिक आवश्यकतायें
- CWSN के लिए पाठ्यचर्या अंगीकरण (सामान्य पाठ्यचर्या अंगीकृत होंगे)CWSN की अधिगम आवश्यकताओं को विद्यालय में उपलब्ध कराना
- विद्यालय में अशक्त बच्चे का समावेशन
- शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री
- CWSN का कक्षाकक्ष समायोजन
- घर आधारित शिक्षा की संकल्पना एवं भूमिका
- CWSN के द्वारा प्रभावी अधिगम के लिए ICT_s का उपयोग
- CWSN और कक्षा कक्ष का प्रबंधन

ईकाई 10: अंगीकरण प्रवीणता का विकास (DAS), सहायक साधन (AS), विशेष उपचार (ST)

- मानसिक मन्दन वाले बच्चों के DAS, AS के लिए ST और श्रवण बाधित, गति चालक, प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात और वाचन बाधित, अधिगम परेशानियाँ और बहुआयामी अशक्तताओं में से प्रत्येक साधन पर एक संक्षिप्त विचार विमर्श

खण्ड 4: बालिकाओं और बालकों का अधिकार

ईकाई 11: शिक्षा में लैंगिक मुद्दे

- लैंगिंक संकल्पना, यौन एवं लिंग में विभेदीकरण
- लड़कों और लड़कियों की जैविक एवं लैंगिक विशेषतायें
- लैंगिक भेदभाव का अर्थ
- हमारे समाज में लड़कों एवं लड़कियों की स्थिति
- लैंगिक भेदभाव के कारण
- विद्यालयों और कक्षा कक्षों में लैंगिक भेदभाव

- लैंगिक विभेदक आचरण को रोकने की आवश्यकता
- विद्यालय और शिक्षकों की भूमिका

इकाई 12: बालिकाओं को सशक्त बनाना

- सशक्तिकरण की संकल्पना, सशक्तिकरण का अर्थ
- सशक्तिकरण के सूचक
- कन्याओं को समर्थ बनाने की आवश्यकता
- कन्या के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका, औपचारिक एवं गैर-औरचारिक शिक्षा के द्वारा सशक्तिकरण।
- कन्याओं को सशक्त बनाने की पहल: संविधान का आदेश
- सरकार की नीतियाँ एवं पहल, NPEGEL
- ग्रामीण क्षेत्रों की कन्याओं के लिए कार्यक्रम, अन्य पहल (महिला समाख्या)
- महिलाओं एवं कन्याओं को सशक्त बनाने में अधिकरणों की भूमिका: सरकार और गैरसरकारी संगठनों की भूमिका, स्थानीय निकायों, विद्यालयों एवं शिक्षकों की भूमिका
- कन्याओं के लिए जीवन कौशल: जीवन कौशल की संकल्पना, कन्याओं के लिए जीवन कौशल, विद्यालयों और शिक्षकों की भूमिका

इकाई 13: बाल अधिकार और पात्रतायें

- मानवाधिकारों का अर्थ और बाल अधिकार
- बालअधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र की पहल: संयुक्त राष्ट्र की घोषणा के मुख्य उद्देश्य एवं प्रयोजन
- बच्चों को मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार कानून 2009 और बालअधिकार
- बाल अधिकारों की सुरक्षा: बाल अधिकारों की सुरक्षा की आवश्यकता
- बाल अधिकारों की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय आयोग के अनिवार्य प्रावधान (NCPCR): बाल अधिकारों का उल्लंघन, बालश्रम: बालश्रम का अर्थ
- बालश्रम के उन्मूलन की आवश्यकता
- बालश्रम पर रोक लगाने के पैमाने
- भारत में बालश्रम उन्मूलन के बारे में योजना आयोग में कार्यकारी सारांश
- विद्यालय में बाल अधिकारों का उल्लंघन: विद्यालय में बालअधिकारों के उल्लंघन के उदाहरण
- शारीरिक दंड एवं बाल अधिकार

- शारीरिक दंड पर रोक लगाने की आवश्यकता
- बाल अधिकारों की रक्षा में शिक्षक की भूमिका, शिक्षकों के लिए आचार संहिता

पाठ्यक्रम-502- प्रारंभिक विद्यालयों में शिक्षा शास्त्रीय प्रक्रियायें

पाठ्यक्रम का प्रारूप

- पाठ्यक्रम में क्षेत्र आधारित सत्रीय कार्य होंगे।
- शिक्षण कौशल का विकास करना।
- विद्यालय के विषयों के सिद्धान्त एवं शिक्षण अभ्यास का समंजन।
- शिक्षा शास्त्रीय परिप्रेक्ष्यों और उपागम को समझना।
- प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षकों को समर्थ करना।

मूलाधार

सभी शिक्षा शास्त्रीय प्रयासों का मूल है सीमित विद्यालयी परिस्थितियों में बच्चों की गुणवत्ता समृद्ध करना एवं उनके अधिगम अनुभवों का विस्तार करना। इस शिक्षा शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के साथ शिक्षक और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुसाध्य बनाने एवं सरलीकरण पर विचार।

यह पाठ्यक्रम अग्रदर्शी शिक्षकों को शिक्षाशास्त्रीय प्रक्रियाओं की संकल्पनात्मक शुद्धता के साथ सुसज्जित करने पर लक्षित होगा ताकि वे विभिन्न संदर्भो में प्रभावी शिक्षण के लिए सबसे उपयुक्त तरीके एवं रणनीतियाँ चुन सकें। विपरीत परिस्थितियों में बच्चों का मूल्यांकन करेंगे जिसके आधार पर वे शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में उपयुक्त बदलाव करने का उत्तरदायित्व ले सकेंगे। शिक्षा शास्त्रीय अध्ययन शिक्षकों को बच्चों के विशिष्ट संदर्भ के साथ विद्यालय विषयों और अधिगम प्रक्रिया को समझने में समर्थ बनायेंगे।

विशिष्ट उद्देश्य :-

- कक्षा कक्ष/विद्यालय परिस्थितियों में बच्चों के सीखने के तरीके और उनकी प्रकृति को समझने में शिक्षकों की सहायता करना।
- तर्क करने तथा अधिगम प्रक्रिया और शिक्षा शास्त्रीय आचरण की संकल्पनात्मक समझ के लिए शिक्षकों की क्षमताओं का विकास करना।
- बच्चों के अधिगम के प्रभावी सरलीकरण के लिए उयुक्त तरीकों एवं रणनीतियों को चुनने, एकीकृत करने प्रयोग करने के लिए शिक्षकों को समर्थ बनाना।
- अधिगम की विभिन्न प्रक्रियाओं का मूल्यांकन करने तथा उनको कक्षाकक्ष अधिगम की प्रोन्नती में प्रभावी प्रयोग करने में समर्थ बनाने के लिए शिक्षकों को स्वतंत्र करना।
- कक्षाकक्ष के अन्दर और बाहर अधिगम प्रक्रिया की समृद्धि के लिए 1CT द्वारा उपलब्ध विभिन्न यंत्रों एवं तकनीकों से शिक्षकों को अवगत कराना।

पाठ्यक्रम 4: 507-समुदाय और प्रारंभिक शिक्षा

पाठ्यक्रम का प्रारूप

- शिक्षा का अधिकार कानून (RET)के परिप्रेक्ष्य में संपूर्ण विद्यालय के विकास की समझ।
- शिक्षक, अभिभावक एवं समुदाय के बीच संबंध विकसित करना।
- शिक्षा के बदलाव में शिक्षकों को जागरूक बनाना।
- शिक्षकों में नेतृत्व गुण के कौशलों को विकसित करना।

मूलाधार और लक्ष्य

यह पाठ्यक्रम भारत में प्रारंभिक शिक्षा के संबंध में शिक्षा और समुदाय के बीच अंत:सम्बन्ध को समझने में शिक्षकों की सहायता करेगा। यह विद्यालय के विकास के लिए शिक्षक एवं समुदाय के बीच संबंध प्रवर्तित करता है। समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए यह कार्यक्रम विद्यालय एवं समुदाय के बीच भागीदारी दिखाता है। विद्यालय ऐसे स्थान पर स्थित होना चाहिए जहाँ सभी बच्चे आसानी से पहुँच जायें। यह विचार विमर्श शिक्षकों को समर्थ बनायेगा कि कैसे बच्चों और समुदाय के साथ संवाद स्थापित किया जाये ताकि उनका नाम लिखा, रखा और उनको बेहतर अधिगम उपलब्धि प्रदान किया जाये।

विशिष्ट उद्देश्य:-

- विद्यालय के विकास में समुदाय की भूमिका की समझ।
- विद्यालय का समुदाय के साथ बेहतर तरीके से संवाद स्थापित करना।
- विद्यालय विकास के संदर्भ में विद्यालय की सुविधाओं और अन्य साधन सेवियों के प्रभाव का मूल्यांकन।
- समुदाय के संसाधनों का दोहन और विद्यालय वातावरण में उनका उपयोग।
- विद्यालय समुदाय सहजीवन के प्रबंधकीय प्रक्रिया को महत्व प्रदान करना।

खण्ड 1: समाज, समुदाय और विद्यालय

इकाई 1: समाज और शिक्षा

भारत में समाज और सामाजिक संबंध: समाज का परिचय; विकास तथा भारतीय समाज में विविधता और एक राष्ट्र के रूप में भारत की एकता; समाज और शिक्षा का अनुबन्धन, समाज के एक अवयव के रूप में विद्यालय (समाज के अनुप्रस्थ काट के रूप में विद्यालय)।

इकाई 2: समुदाय और विद्यालय

समुदाय की समझ (समाज बनाम समुदाय); समुदाय के संदर्भ में प्रारंभिक शिक्षा; समुदाय और विद्यालय

अंत:सम्बन्ध, एक समुदाय के रूप में विद्यालय, भाषायी विकास पर प्रभाव, सांस्कृतिक विकास, जीवन की शैली (त्योहारों के साथ) और विभिन्न जीवन कौशलों का विकास

इकाई 3: विद्यालयी शिक्षा में समुदाय का योगदान

अभिभावकों की भूमिका, समुदाय एक समग्र प्रकार में (समर्थन; विद्यालय संसाधन के रूप में समुदाय; अधिगम सामग्री के विकास में समुदाय); अनुभव एवं शोध अध्ययन

इकाई 4: सर्वशिक्षा अभियान (SSA) और शिक्षा प्राप्ति का अधिकार (RTE) के अन्तर्गत समुदाय की भागीदारी के लिए प्रावधान

(भारत में प्रारंभिक शिक्षा का अनुबंधन, पाठ्यक्रम-खण्ड-2)

नीति प्रावधान, अभिभावक शिक्षक संघ की भूमिका/मातृ शिक्षक संघ, विद्यालय प्रबंधन समीति, स्वयं सहायता समूह, पंचायती राज के मुख्य उद्देश्य और प्रारंभिक शिक्षा में एक संस्थान के रूप में उसकी भूमिका, प्रारंभिक शिक्षा और समुदाय के साथ भागीदारी, अनुभव एवं शोध अध्ययन।

खण्ड-2: विद्यालय प्रणाली

इकाई 5: बच्चे की पात्रतायें और विद्यालय प्रावधान

शिक्षा के अधिकार आधारित उपागम (विद्यालय और बच्चे के संदर्भ में मानवाधिकार), शिक्षा के अधिकार को मानवाधिकार के रूप में विचारित किया जाना, बच्चों के लिए मुक्त एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार कानून 2009/ संपूर्ण विद्यालय के मुख्य पक्ष: विद्यालय में बच्चों की पहुँच (बाधा मुक्त आगमन), विद्यालय परिसर में बच्चों के अनुभव (बच्चों के मैत्रीपूर्ण मूल तत्व साइकिल, वाहनों के लिए पड़ाव स्थल के साथ), कक्षाकक्ष में बच्चों के अनुभव (स्थान, बैठने की व्यवस्था की विशेषता, प्रकाश, वायु संचालन, बरामदा), विद्यालय में बच्चों की सुरक्षा (आग, पानी, वायु और आपातकालीन दैवीय स्थितियाँ), प्रभावी अधिगम के लिए विद्यालय में सुविधायें, (शिक्षा शास्त्रीय उपयोग के लिए भीतरी एवं बाहरी स्थान) मध्यान्ह भोजन के लिए सुविधा, प्रत्येक छात्र के लिए पेयजल और प्रसाधान गृह (पर्याप्त पेयजल और स्वच्छता) खेलकूद एवं मनोरंजन की सुविधा, बागवानी के लिए सुविधायें, अनुभवजन्य अधिगम, अन्वेषण, पूछताछ, खोज आदि के लिए अत्यधिक गतिविधियों के साथ बच्चों के प्रति केन्द्रित एवं मैत्रीपूर्ण शिक्षा शास्त्रीय प्रक्रियाओं को प्रोत्साहन। (प्रारंभिक शिक्षा में शिक्षा शास्त्रीय प्रक्रियाओं के साथ संयोजन पाठ्यक्रम-3,खण्ड-1

इकाई 6: शिक्षक और विद्यालय

विद्यालय के संदर्भ में शिक्षक, विद्यालय प्रणाली में इसके लिए सर्व शिक्षा अभियान का हस्तक्षेप, शिक्षकों का व्यावसायिक विकास (विद्यालय पर्यावरण में व्यवसायिक विकास का स्थान निर्धारण करना, विद्यालय समुदाय की भागीदारी को सम्मिलित करते हुए सर्वशिक्षा अभियान के माध्यम से व्यवसायिक विकास कार्यक्रम), शिक्षक नेतृत्व।

इकाई 7: शिक्षक नेतृत्व

नेतृत्व की संकल्पना, नेतृत्व के प्रकार (प्रजातांत्रिक, निरंकुश), नेता और बहिष्कृत, नेतृत्व कौशल, शिक्षक

सामर्थ्य, ज्ञान, निष्पादन और शैक्षिक परिवर्तन के लिए वचनबद्धता, विश्वासोत्पादक वार्तालाप, निर्णय निर्माण एवं समस्या समाधान।

इकाई 8: शैक्षिक अभिकरणों के साथ संबंध

शिक्षा संगठनों की भूमिका SSA। संरचनायें (DRC,BRC,CRC) प्रशिक्षण और पाठ्यचर्या प्रारंभिक शिक्षा अभियान का सार्वभौमिकरण, (SSERT, DIET) प्रारंभिक विद्यालय स्तर पर विकासात्मक चरणों में सहायता के लिए स्वैच्छिक अभिकरणों की भूमिका, शिक्षा के अभिकरणों की संकल्पना, शिक्षा के अभिकरणों के प्रकार, केन्द्र सरकार और राज्य सरकार के साथ शिक्षा के विभिन्न अभिकरणों का संपर्क, मुख्य अध्यापकों की भूमिका और शिक्षक बनाम समाज।

खण्ड-3: विद्यालय समुदाय अतंःसम्बन्ध का प्रबंधन

ईकाई-: 9: समुदाय की गतिशीलता (अभ्यास आधारित)

विद्यालय शिक्षा में समुदायों को गतिशील बनाने के रास्ते व साधन; अध्ययनवृत्त, राज्यों में चारों तरफ अच्छे अभ्यास (अध्यापक नेतृत्व, समुदाय की गतिशीलता पर समुदाय आधारित परियोजना का संयोजन)

इकाई 10: विद्यालय प्रबंधन

विद्यालय प्रबंधन का अर्थ एवं प्रकृति, प्रबंधन के घटक एवं उनके नियम (योजना बनाना, बजट बनाना, संगठन बनाना, निर्देश देना, नियंत्रण करना, समन्वय, निर्णय निर्माण, गतिविधियाँ का मूल्यांकन और कार्यक्रम) प्रबंधन के प्रकार:भागीदारी, बिना भागीदारी, भागीदारी प्रबंधन की प्रक्रिया।

इकाई 11: विद्यालय एवं समुदाय के संसाधन का प्रबंधन

संसाधनों के प्रकार: मानवीय, भौतिक और आय के वित्तीय साधन- सरकार, अन्य अभिकरण, स्थानीय निकाय, समाज द्वारा स्वैच्छिक अंशदान, दान, परीक्षा शुल्क की बचत।

इकाई 12: विद्यालय समुदाय भागीदारी के प्रबंधन उपागम

प्रबंधन उपागम: अर्थ, प्रकृति, विस्तार, उपागमों के प्रकार, मानवश्रम

- लागत लाभ
- सामाजिक माँग
- सामाजिक न्याय

विद्यालय और समुदाय भागीदारी को सशक्त बनाने में प्रत्येक उपागम की सार्थकता। प्रबंधन और विद्यालय समुदाय भागीदारी में विभेदीकरण करना और दोनों अभिकरणों के मध्य संबंध के सशक्तिकरण की प्रक्रिया।

सम्पूरक सामग्री: राज्यभर में समुदाय की गतिशीलता के केस पर वीडियो।

समूह 2: प्रारंभिक स्तर पर विद्यालय विषयों का शिक्षण-अधिगम

NCF 2005 विभिन्न विषय क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रक्रियाओं के सरलीकरण के लिए सभी योजनाओं को दिशा निर्देश प्रदान कर रहा है। यह पाँच मुख्य दिशा निर्देशक सिद्धांतों के इर्द-गिर्द केन्द्रित है:-

1. विद्यालय के बाह्य ज्ञान को जीवन से जोड़ना।
2. सुनिश्चित करना कि अधिगम परंपरागत विधियों से हटकर हो।
3. पाठ्यचर्या को समृद्ध करना ताकि यह पाठ्य पुस्तकों से बाहर हो।
4. परीक्षाओं को अत्यधिक नमनीय बनाना और उनको कक्षाकक्ष जीवन से एकीकृत करना।
5. देश की प्रजातांत्रिक राजनीति के अन्तर्गत सम्बद्ध लोगों द्वारा सूचित एक दमनकारी पहचान को पोषित करना।

पाठ्यक्रम 5: 503-प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण

पाठ्यक्रम का प्रारूप-

- भाषा-शिक्षण के कौशलों को विकसित करना।
- युवा अधिगमकर्ताओं और उनके अधिगम संदर्भ को समझना।
- क्षेत्र-आधारित कुछ इकाईयाँ

मूलाधार और लक्ष्य

यह पाठ्यक्रम प्रारंभिक स्तर पर **अधिगम कर्ताओं** के भाषा शिक्षण पर केन्द्रित है। भाषा-शिक्षण में छात्र शिक्षक के समकालीन अभ्यासों को निखारना भी इसका लक्ष्य है। यह पाठ्यक्रम भाषा शिक्षण के रचनात्मकतावादी उपागम पर आधारित है। शिक्षक एक वातावरण सृजित करने में समर्थ होगा जो कि अधिगमकर्ताओं को भाषा अधिगम के साथ प्रयोग करने को प्रोत्साहित करेगा।

विशिष्ट उद्देश्य:-

- अध्यापकों को भाषा शिक्षण अधिगम के सामान्य सिद्धांतों को समझने में समर्थ बनाना।
- भाषा शिक्षण के लिए कक्षाकक्ष प्रबंधन कौशलों, प्रक्रियाओं और तकनीकों को विकसित करना।
- भाषा मूल्यांकन के मुद्दे और कक्षाकक्ष शिक्षण में उनके प्रभाव का परीक्षण करना।
- प्रारंभिक स्तर पर भाषा शिक्षण की सामर्थ्य विकसित करना।
- भाषा मूल्यांकन के मुद्दे और कक्षाकक्ष शिक्षण में उनके प्रभाव का परीक्षण करना।
- प्रारंभिक स्तर पर भाषा शिक्षण की सामर्थ्य विकसित करना।
- भाषा के संबंध में-संकल्पना, प्रकृति, संरचना, कार्यों और महत्व की समझ विकसित करना।

- पर्यावरण अध्ययन की संकल्पना, अधिगम की सशक्तिकरण के लिए योजना बनाना और समृद्ध बनाने वाली गतिविधियों का आयोजन करना।

पाठ्यक्रम 8 : 508- प्रारंभिक स्तर पर कला, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा तथा कार्य शिक्षा का अधिगम

पाठ्यक्रम का प्रारूप

इस पाठ्यक्रम का प्रारूप कला, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा तथा कार्य शिक्षा में साकल्यवादी अधिगम प्रदान करने के लिए किया गया है। प्रारंभिक शिक्षकों में पर्याप्त ज्ञान प्रदान करने तथा इच्छित कौशलों की समृद्धि के लिए सभी तीनों घटकों को आवृत किया गया है ताकि वे अपने शिष्यों को इन क्षेत्रों में अधिगम करने के लिए सरलीकरण के योग्य बना सकें। विषय पाठ्यक्रम के प्रत्येक घटक को उनके महत्व के अनुसार अलग-अलग नीचे दिया गया है :-

1. कला शिक्षा

पाठ्यक्रम के मूलाधार और उद्देश्य

कला शिक्षा अधिगमकर्ताओं के मध्य सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए सार्थक अवसर प्रदान करता है। यह समाज की संस्कृति को समझने एवं आदर करने के लिए जीवन कौशलों की समृद्धि, मूल्यों को मन में बैठाने और संवेदनशीलता विकसित करने में सहायता करता है। कला जबकि एक आंतरिक अनुभव, कुछ चीजों की अनुभूति, विवेचन और उसके अनुसार जीने का दृश्य या निष्पादन है। यह दोनों 'करना' और होता है। विद्यालय शिक्षा के प्रारंभिक शिक्षकों से अपेक्षित है कि वे अपने शिष्यों में कलात्मक विकास की प्रक्रिया को समझें। उनकी सृजनात्मक अभिव्यिक्ति और उनमें प्रायोगिक अधि गम के लिए एक प्रेरक वातावरण सृजित करें। एक अच्छी तरह से प्रारूपित कला शिक्षा का पाठ्यक्रम प्रत्येक शिक्षक शिष्य में सौन्दर्यात्मक समझदारी, कलात्मक योग्यता और सृजनात्मक कौशलों का विकास कर सकता है।

विशिष्ट उद्देश्य :-

- प्रशिक्षु अध्यापक योग्य होगा :-
- कला शिक्षा को समझने और रसास्वादन करने में।
- कला शिक्षा के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की कलाओं के ज्ञानार्जन में।
- प्रत्येक बच्चे के साकल्यवादी विकास के लिए कला शिक्षा को अभिष्ट बनाने में।
- विभिन्न कला रूपों की सुन्दरता के प्रति जवाब व्यक्त कर मौलिक अन्वेषण, अनुभव और मुफ्त अभिव्यक्ति के माध्यम से कलात्मक और सौन्दार्यत्मक समझदारी का विकास करना।
- प्रारंभिक विद्यालय के पाठ्यचर्या के इर्दगिर्द के विभिन्न कला रूपों को एकीकृत करना।

खण्ड 1 : - कला शिक्षा

इकाई 1 : कला और कला शिक्षा की समझ (सैद्धांतिक)

I. कला शिक्षा का अर्थ एवं संकल्पना :- दृश्य एवं निष्पादित कला और विद्यालय शिक्षा के प्रारंभिक स्तर पर उनकी सार्थकता।

II. बच्चों को कला की समझ

III. विद्यालय शिक्षा के प्रारंभिक स्तर पर कला शिक्षा (दृश्य एवं निष्पादित) का महत्व।

IV. क्षेत्रीय कला और शिल्प एवं शिक्षा में उनकी सार्थकता।

इकाई 2: दृश्य कला एवं शिल्प (प्रायोगिक)

I. दृश्य कला की सामग्रियों के साथ प्रयोग जैसे पेंसिल, पेस्टल रंग, पोस्टर रंग, कलम और स्याही, रंगोली की सामग्री, मिट्टी, मिश्र सामग्री आदि।

II. दृश्य कला की विभिन्न विधियों के साथ अन्वेषण और प्रयोग; रेखाचित्र एवं चित्रकारी, ब्लॉक मुद्रण, कोलाज बनाना, कठपुतली, मुखौटा निर्माण, मिट्टी का प्रतिरूपण, कागज काटना और मोड़ना आदि।

III. किये गये प्रयोगों के लिए फोल्डर बनाना, प्रत्येक कला गतिविधि के एक-एक शीट को सुरक्षित रखना।

इकाई 3 : प्रर्दशन कला (प्रायोगिक)

I. क्षेत्रीय कला रूपों के संगीत, नृत्य, थियेटर और कठपुतली को सुनना/देखना और अन्वेषण करना।

II. कला रूपों - संगीत, नृत्य थियेटर और कठपुतली में से एक को तैयार करना और निष्पादन करना।

III. अध्यापक द्वारा एक प्रस्तुति की योजना बनाना।

IV. प्रायोगिक गतिविधियों को आवृत करने के लिए फोल्डर बनाना।

इकाई 4:- प्रारंभिक कक्षाओं के लिए कला शिक्षा की योजना व संगठन

I. प्रारंभिक कक्षाओं के लिए कला अनुभव की योजना — गतिविधियाँ और समय-सारणी।

II. कला अनुभव के लिए सामग्रियों का संगठन।

III. प्रारंभिक स्तर पर कला अनुभव के लिए संगठन और सरलीकरण।

इकाई 5 :- कला शिक्षा में मूल्यांकन

I. कला शिक्षा में मूल्यांकन

II. पोर्टफोलियो का निर्माण

III. मूल्यांकन के विविधि यंत्रों एवं तकनीकों के प्रयोग की समझ जैसे- प्रेक्षण अनुसूची, परियोजना, पोर्टफोलियो, जाँच सूची, श्रेणी पैमाना, उपाख्यान मूल प्रतिवेदन, प्रदर्शन आदि।

2. स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा

मूलाधार एवं पाठ्यक्रम के उद्देश्य

स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा, विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों का एक अनिवार्य अंग है। स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में शोध ने विद्यालय स्तर पर प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए विधियों एवं कौशलों को एक नई ऊँचाई प्रदान किया है। शिक्षकों को ज्ञानार्जन के लिए एक अच्छी तरह संरचित अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम आवश्यक है। कौशलों को भी अर्जित करना जो कि शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में एक स्वस्थ जीवन चर्या प्रोन्नत करने में सहायक हो सके। स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम जब प्रभावी ढंग से लागू किया जाये तो वह एक स्वस्थ एवं सक्रिय जीवन देने के लिए अधिगमकर्ता को समर्थ बनाने में अग्रणी भूमिक निभा सकता है। स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम का शैक्षिक उपलब्धि, संवेगात्मक स्थिरता और अन्त:वैयक्तिक संबंध पर एक सकारात्मक प्रभाव है। यह सभी शिक्षकों के प्रभावी प्रशिक्षण से संभव हो सकता है जिसके लिए स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में एक अच्छी तरह संरचित अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम आवश्यक है।

विशिष्ट उद्देश्य :-

प्रशिक्षु शिक्षक योग्य होगा :-

I. स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा के संकल्पना की साकल्यवादी समझ बनाने में।

II. विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम के मुख्य पक्षों से संबंधित ज्ञान एवं अनुभव अर्जित करने में।

III. विद्यार्थी के व्यक्तित्व के एकीकृत विकास की अवधारणा को समझने में।

IV. बच्चों के एकीकृत विकास पर लक्षित प्रभावी शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम का संगठन और आयोजन : शारीरिक, संवेगात्मक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक।

V. विद्यालयी बच्चों के लिए योगा के महत्व को समझना और विद्यालय में योगा के पर्याप्त ज्ञान और कौशलों को अर्जित करने में।

खण्ड 2 :- स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा

इकाई 6 :- स्वास्थ्य का अर्थ एवं अभिप्राय

I. स्वास्थ्य की संकल्पना : शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक स्वास्थ्य, सामाजिक स्वास्थ्य और आध्यात्मिक स्वास्थ्य।

II. व्यक्ति, समाज व परिवार के लिए स्वास्थ्य का अभिप्राय।

III. स्वास्थ्य एवं शिक्षा के बीच संबंध :- शिक्षा की पूर्वापेक्षा के रूप में स्वास्थ्य और शिक्षा के लक्ष्य के रूप में स्वास्थ्य।

इकाई 7 :- विद्यालय स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम के मुख्य पहलु

I. स्वास्थ्य विद्यालय पर्यावरण : स्वच्छ पेयजल आपूर्ति, स्वच्छ शौचालय एवं मूत्रालय, सुरक्षित भोजन, हस्त प्रक्षालन सुविधायें, जल निकास, कचरा निस्तारण, प्रकाश व्यवस्था, वायु संचालन, आरामदेह बैठने की व्यवस्था, सकारात्मक और प्रेरक संवेग और सामाजिक वातावरण।

II. स्वास्थ्य निर्देश: भोजन एवं संतुलित आहार, संवाहक रोग, आसन, स्वस्थ आदतें।

इकाई 8: आवश्यक स्वास्थ्य सेवायें

I. विद्यालय स्वास्थ्य सेवायें : विद्यार्थियों को अभिष्ट अधिगम, स्वस्थ जीवन और अच्छी नागरिकता के लिए तैयार करने के लिए स्वास्थ्य सेवाओं के प्रावधान।

II. विद्यालय और घर पर स्वास्थ्य आपदाओं के विरुद्ध सुरक्षा।

III. आपातकाल एवं दुर्घटना में प्राथमिक चिकित्सा का प्रावधान।

इकाई 9. शारीरिक शिक्षा का अर्थ एवं अवधारणाएँ

I. शारीरिक शिक्षा का अर्थ एवं महत्व

II. शारीरिक शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य : व्यक्तित्व के एकीकृत विकास की संकल्पना: जैविक, बौद्धिक, संवेगात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक पहलु।

III. सबके लिए शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम: अंतरंग एवं बहिरंग, सामूहिक स्वास्थ्य कार्यक्रम

इकाई 10 : शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम की योजना और संगठन

I. शारीरिक शिक्षा में पाठ योजना के सिद्धान्त

II. शिक्षण एवं अधिगम की विधियाँ: निरूपण विधि, पूर्ण-अंश-पूर्ण विधि, आदेश विधि, दर्पण विधि।

III. सामूहिक स्वास्थ्य कार्यक्रम का आयोजन करना, सभा, मार्च पास्ट, व्यायाम, खेलकूद सम्मेलन।

IV. प्रारंभिक स्तर पर स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा में शिक्षक की भूमिका मददकर्ता के रूप में, सलाहकार के रूप में, दुष्ट विद्यार्थियों को पहचानने में और उपचार्य कमियों को सुधारने के लिए माप लेने के रूप में।

इकाई 11 :- खेल, क्रीड़ा एवं योग

I. खेल और मनोरंजन : मूल नियम, मौलिक कौशलों, खेल के मैदानों का चिन्हिकरण करना।

II. देशी खेल, गौण खेल: भीतरी एवं बाहरी खेल।

III. योगा: 1-14 वर्ष समूह के बच्चों के लिए आवश्यकता एवं महत्व।

IV. योगा कार्यक्रम : मूल आसन, प्राणायाम, शिष्यों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं के लिए और उनके समग्र विकास को प्रोन्नत करना।

3. कार्य शिक्षा

मूलाधार और पाठ्यक्रम के लक्ष्य

यह कार्यक्रम प्रशिक्षु अध्यापकों को कार्य के महत्व, हस्तचालित कार्य को विद्यालय शिक्षा के एक अनिवार्य अंग के रूप में समझने का अवसर प्रदान करता है। यह स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विविध उम्र के बच्चों के उपयुक्त गतिविधियों को पहचानने की अन्त:दृष्टि प्रदान करता है। इसमें कार्य संपादन करने और कार्य निरुपण से संबंधित गतिविधियों को करने की विविध विधियाँ हैं और यह पाठ्यक्रम प्रशिक्षुओं को निश्चित रूप से विषय के उपयुक्त विभिन्न कार्य संपादन रणनीतियों में विशेषज्ञता प्राप्त करने में सहायता प्रदान करेगा। यह पाठ्यक्रम प्रशिक्षुओं को विषय के विविध पाठ्य सहगामी क्षेत्रों — भाषा, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित, कला शिक्षा और स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा को एकीकृत करने में भी समर्थ बनायेगा। यह पाठ्यक्रम प्रशिक्षुओं में बच्चों के निर्धारण और सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के लिए पोर्टफोलियो तैयार कर तथा अन्य प्रतिवेदनों के द्वारा मूल्यांकन के कौशलों को विकसित करेगा। यह कार्य शिक्षा कार्यक्रम को सफलतापूर्वक लागू करने में समुदाय को सम्मिलित करने तथा समुदाय के संसाधनों का उपयोग करने की आवश्यकता को समझने में उनको योग्य बनायेगा।

विशिष्ट उद्देश्य :-

- शिक्षा के प्रारंभिक स्तर पर कार्य शिक्षा की आवश्यकता, संकल्पना और प्रकृति को समझने में।
- कार्य शिक्षा को अन्य विद्यालयी विषयों के साथ एकीकृत करने में।
- श्रमिक के कार्य और मर्यादा के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति विकसित करने में।
- बच्चे के सामाजिक, सांस्कृतिक, शारीरिक और मानसिक विकास के एक यंत्र के रूप में कार्य को उपयोग में लाने के कौशलों को विकसित करने में।
- कार्य आधारित गतिविधियों के लिए नियतकालिक योजना संगठित करने और लागू करने में।
- कार्य शिक्षा के लिए समुदाय के संसाधनों को पहचानने और संगठित करने में।
- कार्य शिक्षा गतिविधियों के मूल्यांकन में।

खण्ड 3:- कार्य शिक्षा

इकाई 12 : कार्य शिक्षा की अवधारणा

I. कार्य और कार्य शिक्षा की संकल्पना

II. कार्य शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।

III. कार्य शिक्षा के लक्ष्य और उद्देश्य।

IV. कार्य शिक्षा के क्षेत्र।

V. शिक्षा शास्त्रीय माध्यम के रूप में कार्य — कार्य और अधिगम।

इकाई 13 : कार्य शिक्षा का क्रियान्वयन (सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक पक्ष)

I. विद्यालयों में कार्य शिक्षा की योजना और संगठन (समय, स्थान और विद्यार्थियों का समूहीकरण)

II. विभिन्न कक्षाओं के लिए कार्य शिक्षा सत्रों की योजना।

III. प्रारंभिक स्तर पर कार्य शिक्षा के लिए सामग्रियों का संगठन।

IV. सामग्रियों, यंत्रों एवं उपकरणों का रखरखाव और भंडारण।

V. विभिन्न पाठ्य सहगामी क्षेत्रों के साथ कार्य का एकीकरण:- कार्य और शिक्षा के एकीकरण के लिए शिक्षण अधिगम रणनीतियाँ।

इकाई 14 : कार्य शिक्षा में कौशलों का विकास (प्रायोगिक कार्य)

नीचे दी गयी गतिविधियों की सूची में से किन्ही दो क्षेत्रों में कौशल विकास —

I. कौशल विकास के लिए आयोजित होने वाले प्रायोगिक कार्य में आवृत होने वाले स्टेप —

- विशिष्ट क्षेत्र की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि
- अपेक्षित सामग्री
- अनुकरण की गई विधियाँ
- उपयोगिता
- लागत

II. गतिविधियों की फाइल तैयार करने के लिए यह अनिवार्य है।

प्रायोगिक गतिविधियों के लिए सुझाई सूची :-

1. पंतंग निर्माण
2. मिट्टी और कपास की सहायता से मनकों (मोतियों) का निर्माण
3. पंखें, डोरमेट्स, टेबल मेट्स बुनना (स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कच्ची सामग्री प्रयुक्त की जानी चाहिए जैसे : खजूर की पत्तियाँ, पुराने कपड़ों के टुकड़े, पाम की पत्तियाँ आदि)
4. मोमबत्ती का निर्माण
5. चॉक निर्माण
6. कूड़ादान, कलम रखने का पात्र (पुराने टिनों से बनाना)
7. कागज के खिलौने (फिरकी, उड़ने वाली पक्षी, दिन एवं रात, मछली, नाचने वाली गुड़िया आदि)
8. कुट्टी

9. केन से बॉस्केट बुनना

10. लिफाफा बनाना (समाचार पत्रों एवं भूरे कागज के सहयोग से) आदि।

नोट :- कौशल विकास प्रयोंगों के लिए, यह अनुशंसित किया जाता है कि कार्यों के विशिष्ट क्षेत्रों को चुना जाये।

इकाई 15: विद्यालय में कार्य शिक्षा एवं समुदाय

I. कार्य शिक्षा में समुदाय की भूमिका।

II. कार्य शिक्षा को लागू करने के लिए समुदाय के संसाधनों की पहचान एवं उपयोग: सामुदायिक संसाधनों का मानचित्रण।

III. कार्य शिक्षा के महत्व के प्रति अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों के लिए अनुकूलन/समर्थन।

इकाई 16 : कार्य शिक्षा में मूल्यांकन

I. कार्य शिक्षा में मूल्यांकन का महत्व।

II. कार्य शिक्षा गतिविधियों को कैसे मूल्यांकित करें?

III. संसूचक आधारित मूल्यांकन।

IV. मूल्यांकन के यंत्र और तकनीकें।

IV. स्वयं, सहपाठी, शिक्षक और समुदाय आधारित मूल्यांकन।

पाठ्यक्रम 9 : 509 - उच्च प्राथमिक स्तर सामाजिक विज्ञान का अधिगम

a. परिचय

एक विद्यालयी विषय के रूप में सामाजिक विज्ञान उसकी प्रकृति और उद्देश्यों के बारे में एक निश्चित समझ पर आधारित है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थी-शिक्षकों को इस विषय के बारे में विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से अवगत कराता है। यह भी परीक्षण किया जाना चाहिए कि किन तरीकों में विभिन्न पाठ्यचर्या पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकों में विषय के विभिन्न दृष्टिकोण एवं समझ प्रत्यावर्तित होते हैं। यह सुझााता है कि कैसे सामाजिक विज्ञान समाज की विवेचित समझ और हमारे चारों तरफ की सामाजिक सच्चाई को समय, स्थान और शक्ति, संरचनाओं, संस्थाओं, प्रक्रियाओं और संबंधाों के प्ररिप्रेक्ष्य में क्षमता विकसित कर सकता है।

b. उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को अधिगमकर्ता की सहायता करनी चाहिए:-

- समाज की विवेचित समझ और विश्लेषण के लिए ज्ञान और कौशल को विकसित करने में जिसमें हम इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र जैसे अनुशासनों के साथ रहते हैं।

- डाटा एकत्र करने, व्याख्यायित करने और विश्लेषित करने के कौशलों के निर्माण में।
- सामाजिक विज्ञान के पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का विवेचित विश्लेषण करने में।
- सामाजिक तथ्यों एवं विकास के बारे में बच्चों की उत्सुकता बढ़ाने के लिए तथा पाठ्यचर्चा के कार्य संपादन के लिए विभिन्न शिक्षाशास्त्रीय प्रणालियों का ज्ञान और उनका उपयोग करने में।

  स्वतंत्रता, समानता, न्याय और विभिन्नता तथा अनेकता आदि के लिए जैसे मानवीय एवं संवैधानिक मूल्यों को संभालने की क्षमता का विकास करना और इन मूल्यों को भयभीत करने वाली सामाजिक शक्तियों को चुनौती प्रदान करना।

C. प्रणाली

इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र की प्रकृति के बारे में विभिन्न परिप्रेक्ष्य, इस पाठ्यक्रम के आधार को यह समझने के लिए गठन करेंगे कि विषय को विभिन्न तरीकों में कैसे विचारित किया जा सकता है और इसका उद्देश्य ऐतिहासिक और सामाजिक है। पाठ्यपुस्तकों और पाठ्यचर्या का विश्लेषण विद्यार्थियों को समझने में मदद कर सकता है कि कैसे समाज, बच्चे और सामाजिक ज्ञान के विविध परिप्रेक्ष्य इन दस्तावेजों और शिक्षा शास्त्रीय युक्तियों को आकार प्रदान करते हैं और वे कैसे कक्षाकक्ष में वैकल्पिक रूप से विचारित और कार्य संपादित की जा सकती है? पढ़ना कि कैसे बच्चे सामाजिक विज्ञान के विभिन्न घटकों और विषय तत्वों को समझते और संप्रत्ययीकरण करते हैं। व्यक्तिगत/सामूहिक चिन्तन जिनमें विभिन्न पाठ्यपुस्तकें और शिक्षण प्रणालियाँ योग्यताओं के विकास को अनुमति या बाधा पहुँचाती हैं। ये प्रशिक्षु शिक्षकों को सामाजिक विज्ञान और उपयुक्त शिक्षा शास्त्रों की उनकी अपनी समझ विकसित करने के अन्य रास्ते उपलब्ध करायेंगे।

खण्ड 1 : एक अनुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान की समझ

इकाई 1 : सामाजिक विज्ञान की प्रकृति

- सामाजिक विज्ञान : विकास और संकल्पना।
- सामाजिक विज्ञान : समय से परे।
- समाज की तात्कालिक स्थिति।
- सामाजिक विज्ञान के घटक : राजनीति, संस्कृति और अर्थव्यवस्था।
- सामाजिक विज्ञान में एकीकरण और अंत: अनुशासनात्मक परिप्रेक्ष्य।

इकाई 2: विद्यालय पाठ्यचर्चा में सामाजिक विज्ञान

- इस इकाई का मुख्य उद्देश्य है सामाजिक अध्ययन पाठ्यचर्या के विकास को प्रभावित करने वाली शक्तियों का परीक्षण करना जो कि सामाजिक अध्ययन पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को बदल देता है।
- औपनिवेशिक शक्ति : राष्ट्रवादी विकल्प

- स्वतंत्रता पश्चात् सामाजिक अध्ययन पाठ्यचर्या पर वाद विवाद।
- राष्ट्रीय एकीकरण और अन्तराष्ट्रीय समझ।
- लिंग, जाति और अनुसूचित जनजाति के परिप्रेक्ष्य।
- सामाजिक अध्ययन पाठ्यचर्या के अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य (UNESCO, दक्षिण अफ्रीका में सामाजिक अध्ययन पाठ्यचर्या का एक उदाहरण)।
- सामाजिक अध्ययन पाठ्यचर्या के संबंध में तात्कालिक राष्ट्रीय सोच एवं अभ्यास।

खण्ड 2: सामाजिक विज्ञान विषय और अवधारणाएं

इकाई 3: इतिहास

- प्रारंभिक स्तर पर इतिहास की संकल्पना और इतिहास विषय
- सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा इतिहास में अपनायी गई विधियाँ।
- सामाजिक अध्ययन पाठ्यचर्या के एक अंग के रूप में इतिहास का महत्व।
- पाठ योजना का प्रतिमान

इकाई 4 : भूगोल

- प्रारंभिक स्तर पर भूगोल की संकल्पना और भूगोल का विषय।
- सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा भूगोल में अपनायी गई विधियाँ।
- सामाजिक अध्ययन पाठ्यचर्या के एक अंग के रूप में भूगोल का महत्व।
- पाठ योजना का प्रतिमान।

इकाई 5 : राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र/समाजशास्त्र के एकीकृत विषय के रूप में सामाजिक और राजनीतिक जीवन

- प्रारंभिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन में सामाजिक और राजनीतिक जीवन का विषय
- सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र में अपनायी गई विधियाँ।
- सामाजिक अध्ययन पाठ्यचर्या के अंग के रूप में राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र का महत्व।
- पाठ-योजना का प्रतिमान।

खण्ड 3: सामाजिक विज्ञान के शिक्षा-शास्त्रीय मुद्दे

इकाई 6 : अधिगमकर्ता की प्रकृति और स्थानीय संदर्भ की समझ

- विविध सामाजिक संदर्भ
- बच्चे सामाजिक अध्ययन के मुद्दों को कैसे समझें।
- मध्य, उच्च प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों में संज्ञानात्मक विकास, संकल्पना निर्माण, उनके उम्र और सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में, पाठ्यचर्चा और शिक्षा शास्त्र के लिए इन तथ्यों का अभिप्राय।
- बच्चों की संकल्पना की समझ का केस अध्ययन, सामाजिक अध्ययन के ज्ञान की संरचना और कक्षाकक्ष अन्त:क्रिया।

इकाई 7: शिक्षण-अधिगम रणनीतियाँ

शिक्षण विधियाँ :- स्वत:शोध/खोज विधि, परियोजना विधि, वृतान्त का प्रयोग, तुलनायें, प्रेक्षण, संवाद और सामाजिक अध्ययन में विचार विमर्श, डाटा की संकल्पना, विभिन्न सामाजिक अध्ययन अनुशासनों में इसके साधन और साक्ष्य, तथ्य और सम्मति के बीच अंतर, पक्षपात एवं पूर्वाग्रह की पहचान, विवेचित सोच पाठ्यक्रम संरचना के लिए व्यक्तिगत अनुभव व अन्य ज्ञान।

(प्रत्येक रणनीति को सचित्र उदाहरण और विभिन्न संसाधनों के साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिए)

इकाई 8: सामाजिक विज्ञान में अधिगम संसाधन

अधिगम संसाधनों के प्रकार: Realia & Diorama, मानचित्र एवं ग्लोब, प्रतिमान, ग्राफ, चार्ट और कार्टून, समयसीमा, पुस्तकें, समाचार पत्रों की कतरन, संग्रहालय, सिनेमा, इन्टरनेट, अधिगम संसाधनों का विकास, अधिगम संसाधनों का प्रबंधन।

इकाई 9 : सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन

सतत् एवं समग्र मूल्यांकन, सामाजिक अध्ययन में सूचनाओं को स्मरण करने पर आधारित मूल्यांकन विधि, समझ, अनुप्रयोग और संश्लेषिकरण, अधिगम को मूल्यांकित करने के वैकल्पिक तरीके (पोर्टफोलियो), मूल्यांकन के आधार, उद्देश्य आधारित प्रश्नों के प्रकार, ग्रेडिंग का महत्व और अंकन प्रणाली।

पाठ्यक्रम 510 - उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान अधिगम

a. परिचय

वैज्ञानिक विधि समाहित करती है अवलोकन करना, प्रतिमानों को देखना, अन्दाजा लगाना, प्रयोगों द्वारा उनकी वैधता को जाँचना और इस प्रकार सिद्धान्तों पर पहुँचना, सिद्धान्तों और भौतिक विश्व को शासित करने का कानून।

b. उद्देश्य

यह खण्ड निम्नलिखित उद्देश्यों पर बल प्रदान कर प्रारंभिक स्तर पर विज्ञान अध्ययन की गुणवत्ता को सुधारने पर लक्षित होगा :-

- बच्चे की विश्व के बारे में प्राकृतिक उत्सुकता का पोषण करना।
- विचार करना कि बच्चे उनकी प्रतिदिन के अनुभवों से अपने आप क्या जानते हैं?
- क्या बच्चा अन्वेषणात्मक और व्यावहारिक गतिविधियों में संलग्न रहता है या सामान्य तकनीकी इकाइयों को स्वयं अपने हाथों से प्रारुपित करता है।
- पारिवारिक अनुभवों, गतिविधियों और प्रयोंगों तथा साथियों एवं शिक्षकों के साथ विचार विमर्श के माध्यम से वैज्ञानिक अवधाारणाओं पर पहुँचना।
- हमेशा प्रश्न पूछना: बिना विवेचित किए कथनों को स्वीकार न करना।
- तद्नुसार अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम निम्नलिखित उद्देश्यों के इर्द-गिर्द कार्य करेगा।
- विद्यार्थियों को उनकी विज्ञान की अपनी अवधारणात्मक समझ को पुन: देखने के लिए प्रोत्साहित करना।
- विज्ञान की प्रकृति के विविध पहलुओं के साथ विद्यार्थियों को सम्बद्ध करना।
- विद्यार्थियों को बच्चों की संज्ञानात्मक विकास और उनकी वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ में सहायता प्रदान करना।
- उपयुक्त शिक्षण अधिगम मूल्यांकन रणनीतियों के चुनाव और उपयोग में विद्यार्थियों की मदद करना।
- एक समावेशी और एक प्रजातांत्रिक कार्य के रूप में विज्ञान को देखने में विद्यार्थियों को समर्थ बनाना।

C. प्रणाली

उपलब्ध साहित्य को पढ़ना, सामान्य गतिविधियों का आयोजन करना तथा प्रयोग, प्रेक्षणों को रिकार्ड करना, साथियों और शिक्षकों के साथ विचारविमर्श करना वे कैसे प्रश्नों पर पहुँचें, जाँच के आयोजन के लिए वे निश्चित तरीकों का चयन करने आदि में प्रशिक्षुओं द्वारा छात्रों को मदद करना। प्रशिक्षुओं की मदद करना कि वे निम्नलिखित को कैसे आयोजित करेंगे:-

- पूछताछ आयोजित करने के विभिन्न तरीके: विभिन्न प्रतियोगिताओं में सामान्य प्रयोगों और अन्वेषणों को निर्धारित करना।
- विज्ञान संग्रहालय, मैदानों का दौरा, परियोजनायें और प्रदर्शनी।
- पेपर पेन्सिल जाँच परीक्षा के लिए विभिन्न रणनीतिक मूल्यांकनों के साथ उपयुक्त प्रश्नों का विकास करना।
- अवधारणा मानचित्रण पर आधारित इकाई योजना तैयार करना।
- शिक्षण-अधिगम सामग्रियों को मूल्यांकित करना जैसे — किताबें, फिल्मों, मल्टीमीडिया पैकेजों को उनकी सार्थकता और आयु उपयुक्तता के लिए।

खण्ड 1: विज्ञान की समझ

इकाई 1: विज्ञान की प्रकृति

- प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिककालीन विज्ञान के इतिहास और दर्शन, विज्ञान का दर्शन।
- विज्ञान क्या है? -परिभाषा और सामान्य लक्षण, विज्ञान की प्रकृति, विज्ञान की प्रक्रिया।
- वैज्ञानिक ज्ञान को समाविष्ट करना :- परिकल्पना, सिद्धांत, तथ्य, प्राकृतिक नियम, साक्ष्य और उदाहरण, निगमनात्मक अनुमान और आगमनात्मक अनुमान।
- वैज्ञानिक सोच: आनुभविक साक्ष्य का उपयोग, तार्किक विवेचन का अभ्यास और अनुमानित ज्ञान के बारे में संशयवादी मनोवृत्ति से संपन्न होना।
- वैज्ञानिक विधियाँ : वैज्ञानिक विधि क्या है? वैज्ञानिक विधियों में आवेष्टित कदम और वैज्ञानिक मनोवृति।

इकाई 2 : वैज्ञानिक जाँच

वैज्ञानिक पूछताछ की अवधारणा, प्रकार

वैज्ञानिक पूछताछ कौशलों की प्रक्रिया:- वैज्ञानिक, प्रक्रियाओं में अधिगमकर्ता की संलग्नता।

— पूछताछ के लिए प्रश्न उठाना

— निर्देश प्राप्त करने के लिए परिकल्पनावाद।

— प्रेक्षण के निर्देशों को प्राप्त करने के लिए भविष्यवाणी करना।

— प्रतिमान और संबंध के लिए खोज।

— पूछताछ के लिए आविष्कार करना और योजना बनाना।

— उपकरणों का प्रारूपण और निर्माण करना।

— भागीदारी करना और संवाद करना।

— स्वचिन्तन और स्व कार्यान्वयन।

— व्यक्तिगत जीवन में पूछताछ।

इकाई -3 : विज्ञान शिक्षण के विभिन्न उपागम

शिक्षण की प्रणाली

उदाहरणों के साथ विभिन्न उपागम : संचारण या व्याख्यात्मक उपागम, प्रक्रिया या पूछताछ उपागम, खोज उपागम।

इकाई-4: करके देखने का अनुभव

— बच्चों के अधिगम में प्रत्यक्ष अनुभव की भूमिका

— अन्वेषण के प्रकार : कक्षा में और विद्यालय के बाहर

— प्रायोगिक कार्य का संगठन

— विद्यालय में और विद्यालय के बाहर सुरक्षा मानक।

खण्ड 2: विज्ञान शिक्षण का प्रबंधन एवं मापन

इकाई 5: उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण की योजना बनाना एवं प्रबंधन करना

— योजना का सामान्य अवलोकन

— विज्ञान में योजना और पाठ्यचर्या का क्षेत्र विस्तार।

— कक्षा स्तर पर योजना - पाठ योजना।

— विद्यालय स्तर स्थानीय स्तर पर, इलेक्ट्रानिक और नॉन-इलेक्ट्रानिक सामग्री की पहचान और विविध संसाधनों का उपयोग।

— अभिलेखन और प्रतिवेदन

इकाई 6 : आंकलन

— निर्धारण:- क्या, कैसे और क्यों - मूल्यांकन की संकल्पना, उद्देश्य और विशेष विवरण, मूल्यांकन के प्रकार, आंतरिक निर्धारण।

— विज्ञान में सतत एवं समग्र मूल्यांकन।

— विज्ञान में अधिगम में मदद के लिए मूल्यांकन का उपयोग करना — कठिन तथ्यों की पहचान करना/उपचारी अधिगम को अनुभव करना।

— संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोगत्यात्मक क्षेत्रों का मूल्यांकन।

— बच्चों के विचारों, कौशलों और मनोवृत्तियों का मूल्यांकन संरचित करना।

इकाई 7: विज्ञान शिक्षण में मुद्दे और चुनौतियाँ

— विज्ञान सबके लिए।

— विभिन्न योग्यताओं का शिक्षण।

— विज्ञान और विज्ञान शिक्षण में उन्नति को जानना।

D.El.Ed. कार्यक्रम के पाठ्यक्रम की मूल्यांकन योजना

क्रम संख्या	पाठ्यक्रम का शीर्षक	बाह्य/ पूर्णांक	उत्तीर्ण होने के लिए अंक	सत्रीय कार्य/ आंतरिक पूर्णांक	उत्तीर्ण होने के लिए अंक	सम्पूर्ण योग
	प्रथम वर्ष					
1.	भारत में प्रारंभिक शिक्षा : सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य	70	28	30	12	100
2.	प्रारंभिक विद्यालयों में शिक्षा-शास्त्रीय प्रक्रिया	70	28	30	12	100
3.	प्रारंभिक स्तर पर भाषा का अधिगम	70	28	30	12	100
4.	प्रारंभिक स्तर पर गणित का अधिगम	70	28	30	12	100
5.	प्रारंभिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन का अधिगम	70	28	30	12	100
6.	विद्यालय में अंत:क्रिया (a) विद्यालय आधारित गतिविधियां (b) कार्यशाला आधारित गतिविधियां	– –	– –	100 100	50 50	100 100
	पूर्ण योग	350	–	350	–	700

संकलित 45 प्रतिशत-315 अंक

द्वितीय वर्ष

क्रम संख्या	पाठ्यक्रम का शीर्षक	बाह्य/ पूर्णांक	उत्तीर्ण होने के लिए अंक	नियत कार्य/ आंतरिक पूर्णांक	उत्तीर्ण होने के लिए अंक	सम्पूर्ण योग
1.	समावेशी संदर्भ में बच्चे को समझना	70	28	30	12	100
2.	समुदाय और प्रारंभिक शिक्षा	70	28	30	12	100
3.	प्रारंभिक स्तर पर कला स्वास्थ्य व शारीरिक और कार्य शिक्षा का अधिगम	70	28	30	12	100
4.	उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान/ सामाजिक विज्ञान का अधिगम	70	28	30	12	100
5.	विद्यालय में अंत:क्रिया (a) कार्यशाला आधारित गतिविधियां (b) अभ्यास-शिक्षण	– –	– –	100 200	50 100	100 200
	सम्पूर्ण योग	280	–	420	–	700
					संकलित 45 प्रतिशत-315	
	समग्र योग	630	–	770	–	1400